आलाप के प्रकार :-

सितार वादन में आलाप मुख्य रूप से गायकी अंग पर आधारित रहता है। और वह भी मुख्यतः ध्रुपद अंग के आलाप पर। जहाँ तक गायन का संबंध है उसमें आलाप के मुख्यतः ~~दो~~ तीन प्रकार होते हैं :- 1. ध्रुपद अंग का आलाप, 2. ख्याल अंग का आलाप, 3. ठुमरी अंग का आलाप।

ध्रुपद अंग का आलाप :- ध्रुपद गायन शैली के आरंभ में विस्तृत आलाप होता है, जिसे नोम तोम का आलाप भी कहते हैं। इसमें नोम-तोम, री, ताना, नोम, ताना, रे, री, तन आदि निरर्थक शब्दों द्वारा आलाप किया जाता है। पहले इस आलाप में 'ओम तू ही अनंत हरी नारायण' अथवा 'ओम अनंत तम्' जैसे भक्तिपूर्ण वाक्यों का प्रयोग होता था। लेकिन बाद में जब संगीत कला अशिक्षित मुसलमान गायकों के हाथों में पड़ गई तो हिन्दी और संस्कृत भाषाओं से ~~अभि~~ अनजान होने के कारण उन्होंने इस आलाप में नोम तोम आदि निरर्थक शब्दों का प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया।

ध्रुपद अंग के इस आलाप के मुख्यतः चार भाग होते हैं :- इन्हें स्थाई, अंतरा, संचारी और आभोग कहते हैं। यह सभी
* ~~स्थाई आलाप :-~~ ध्रुपद की बंदिश गाने से पूर्व ताल रहित अर्थात खुले रूप में गाए जाते हैं।

* स्थाई आलाप :- इस भाग में प्रत्येक आलाप मध्य सा या इसके आस-पास के स्वरों

से शुरु होता है और हर आलाप के बाद ~~सम~~ के ~~किस~~ मध्य स पर ही इसकी समापती होती है। इसलिए इसमें स्वरों की क्रमिक रूप से राग के स्वरुप के अनुसार बढ़त की जाती है। इसमें स्वरों की बढ़त मध्य सप्तक में म या प तक होती है। वादन में इस आलाप में स्वरों की बढ़त ध या नि तक भी कर ली जाती है। इसमें मींड, कण और जमजमा का खूब प्रयोग होता है।

इसमें आलाप करते समय पहले मन्द्र और अति मन्द्र सप्तक में स्वरों की बढ़त की जाती है और इसके उपरांत धीरे-२ मध्य सप्तक में बढ़त करते हैं। ~~इस~~ प्रत्येक आलाप का समाप्ती पर मध्य स के आस-पास राग के किसी ~~दो~~ महत्वपूर्ण स्वर समूह को लेकर लय बद्ध रूप में आलाप का सम दिखाया जाता है।

अंतरे का आलाप :- इस भाग में आलापों की गति स्थाई की तुलना में कुछ अधिक होती है। आलाप को ग, म, प आदि स्वरों से आरंभ किया जाता है और बढ़त करते हुए धीरे-२ तार स तक पहुंचते है।

तार स पर पहुंचने पर अनेक प्रकार के नए-२ स्वर समूहों द्वारा बार-बार इस स्वर पर आते हैं और इसे खूब चमकाते हैं। इसके बाद अपनी क्षमता और राग के स्वरुप के अनुसार तार सप्तक के स्वरों की बढ़त की जाती है। हर आलाप को वापस लाकर मध्य स पर

समाप्त करते हैं। हर आलाप की समाप्ती पर पहले की भाँति आलाप का सम दिखाया जाता है।

* संचारी आलाप - इस भाग तक आते-२ आलाप बिलकुल खुल्ला ना रहकर लयबद्ध हो जाता है। तंत्रकारी में इसी को जोड़ अथवा जोड़ आलाप कहते हैं। मींड, कण और, जम्जमा के, सूत, घसीट आदि के साथ-२ यहीं से आलाप में गमक का प्रयोग भी आरंभ हो जाता है और स्वरों को बहुत लयबद्ध रूप में की जाती है। यहाँ भी प्रत्येक आलाप अथवा जोड़ की समाप्ती आलाप का सम दिखाकर की जाती है। हर आलाप के ~~आभोग~~ :- बाद लय थोड़ी-२ बढ़ती रहती है।

* आभोग :- इस भाग तक आते-आते आलाप की लय द्रुत हो जाती है। वादन में इस को जोड़ झाला भी कहते हैं। इसमें चिकारी का प्रयोग और भी अधिक हो जाता है। साथ ही गमक के साथ-२ छोटी-२ तानों का प्रयोग भी खूब होता है।

यहाँ भी हर आलाप को मध्य स पर समा पत करते हुए आलाप का सम दिखाते हैं और लय को थोड़ा-२ बढ़ाते चलते हैं अंत में लय अति द्रुत होने पर मध्य स पर ला कर सम का टुकड़ा तीन बार लेते हुए आलाप की समाप्ती की जाती है।

२. ख्याल अंग का आलाप - यह आलाप मुख्य रूप से तीन रूपों में होता है :- १. आकार द्वारा, २. सरगम द्वारा ३. बोल आलाप।

गायन के आरंभ में बिना

ताल के आकार में संक्षिप्त आलाप कि लिया जाता है। आगरा घराने के गायक ख्याल के शुरू में ध्रुपद की तरह नोम तोम का आलाप करते हैं। लेकिन यह ध्रुपद जितना विस्तृत नहीं होता।

इसके बाद विलम्बित ख्याल की बंदिश प्रारंभ की जाती है और स्थाई गाने के बाद तालबद्ध रूप में क्रमिक आलाप किया जाता है। पहले कुछ आलाप आकार में किए जाते हैं और फिर गीत के बोलों को स्वरों में पिरोते हुए बोल आलाप किया जाता है। हर आलाप के बाद अनेक प्रकार से बंदिश का मुखड़ा दिखाया जाता है।

हर आलाप में स्वरों को बदल करते हुए जब वे और नि तक पहुँचते हैं तो उस आलाप के बाद स्थाई के स्थान पर अंतरे का मुखड़ा लेते हुए ~~अंतरे~~ बंदिश का अंतरा प्रारंभ किया जाता है। इसमें तार स पर पहुँचकर उस पर खूब न्यास करते हैं जो श्रोताओं को बहुत भला प्रतीत होता है। हर आलाप की समाप्ती मध्य स के स्थान पर तार स पर की जाती है और अंतरे का मुखड़ा पकड़ा जाता है। अंत में पूरा अंतरा गा कर फिर से स्थाई में वापस आते हैं।

3. ठुमरी अंग का आलाप - ठुमरी अंग का आलाप

कुछ चंचलता लिए हुए होता है। इसमें आकार के आलाप के स्थान पर बोल आलाप का महत्व अधिक होता है। आरंभ में संक्षिप्त आलाप लेने के बाद ठुमरी की बंदिश आरंभ की जाती है और एक बार स्थाई गाने के उपरांत सम के बाद आलाप किए जाते हैं। इन आलापों में ठुमरी के बोलों को छोटे-२ स्वर समूहों में पिरोते हुए अनेक प्रकार से उनके भाव दिखाए जाते है, जिसे बोल बनाना अथवा बोल बनाव कहते हैं। इसमें भी स्थाई और अंतरे में ताल बद्ध आलाप किया जाता है।

तंत्रकारी का आलाप :- वादन में अधिकतर गायक प्रारंभ में ध्रुपद अंग पर आधारित आलाप करते हैं जिसे आलाप, जोड़-झाला कहते हैं। इसमें वह अपनी इच्छा और शैली के अनुसार परिवर्तन भी करते चलते हैं।

इसके बाद विलम्बित गत में छोटे-२ तालबद्ध आलाप किए जाते हैं जो कि किन्हीं अंशों तक लयबद्ध कहे जा सकते हैं। कई बार आलाप की लंबाई एक से अधिक आवर्तन की भी होती है। ऐसी स्थिति में आलाप के बीच में आने वाले हर आवर्तन के सम को कलाकार अनेक प्रकार

से मनमोहक रूप में दिखाते हैं। और पहले स्थाई फिर अंतरे का आलाप किया जाता है। द्रुत गत में भी कभी 2 संक्षिप्त तालबद्ध आलाप लिए जाते हैं जिनकी समाप्ती कई बार अवरोहात्मक तान के रूप में भी होती है।